

ये सारे फूल कहां से खिले?

दुनिया में जितनी भी वनस्पति है, उनमें से फूलधारी पेड़-पौधे सबसे अधिक विविधतापूर्ण हैं। मगर ये इतने तरह-तरह के फूलधारी पादप आए कहां से? इनके विकास की कड़ियां कहां हैं? दरअसल यह अचरज का विषय है कि फूलधारी पादप अन्य तथाकथित 'आदिम वनस्पति' से इतने अलग कैसे हो गए? 'आदिम वनस्पति' से तात्पर्य मॉस, फर्न, कोनीफर वगैरह से है। इस पहली से व्यथित होकर चार्ल्स डार्विन ने हाथ डालते हुए इसे एक 'घृणास्पद रहस्य' तक कह डाला था।

अलबत्ता कोलेरेडो विश्वविद्यालय के विलियम फ्राइडमैन को लगता है कि उन्होंने कम से कम इस रहस्य का कुछ सुराग तो खोज निकाला है। फ्राइडमैन न अपना इस रोज का विवरण नेचर शोध पत्रिका में प्रस्तुत किया है।

दरअसल फ्राइडमैन ने एक ऐसा फूलधारी पौधा खोजा है जो शायद वह कड़ी है जो फूलधारी जगत को शेष वनस्पति जगत से जोड़ती है। यह पौधा है *एम्बोरेला*



ट्राइकोपोडा और यह सिर्फ न्यू कैलिडोनिया के पैसिफिक द्वीप पर मिलता है। इसे सजीव जीवाश्म माना जाता है क्योंकि अतीत में जब भी यह अन्य पादपों से अलग होकर एक स्वतंत्र प्रजाति बना था, तब से इसमें लगभग कोई परिवर्तन अथवा विकास नहीं हुआ है। अर्थात् यह अपनी उत्पत्ति के काल से अपरिवर्तित रूप में ही आज भी जीवित है। *एम्बोरेला ट्राइकोपोडा* करीब 13 करोड़ वर्ष पूर्व शेष फूलधारी पादपों से अलग-थलग हो गया था।

इस पौधे का सूक्ष्म अध्ययन करने पर पता चला कि इसके भ्रूण कोश में कोशिकाओं की संख्या अन्य फूलधारी पौधों से भिन्न है। भ्रूण कोश अण्डाणु का निर्माण करता है। इसके अलावा *एम्बोरेला ट्राइकोपोडा* में अण्डाणु बनाने के लिए कोशिका विभाजन का पैटर्न कोनीफर्स जैसे बीजधारी पादपों की याद दिलाता है। गौरतलब है कि कोनीफर्स में फूल नहीं होते मगर बीज बनते हैं। इन तथ्यों से लगता है कि *एम्बोरेला* फूलधारी पादपों और अन्य पादपों के बीच की कड़ी है। (स्रोत फीचर्स)